# 14 नवम्बर 2016 को विज्ञान भवन, नयी दिल्ली में राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा आयोजित किये जा रहे ''संत ईश्वर पुरस्कार वितरण समारोह'' में माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उपेक्षित वर्गों के विकास के लिए ज़मीनी स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों, आदिवासी क्षेत्रों, महिलाओं और बच्चों के विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहे व्यक्तियों और संगठनों द्वारा किये जा रहे उल्लेखनीय कार्य को मान्यता देने एवं पुरस्कृत करने हेतु संत ईश्वर फाउंडेशन एवं राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस समारोह में आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इन व्यक्तियों एवं संगठनों ने जरूरतमंद लोगों की सेवा करके उनकी जिन्दगी बेहतर बनाई है और दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। सबसे पहले मैं उन सबको बधाई देती हूँ जिन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना गया है। आप सब वास्तव में बहुत सारे लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत भी हैं। मैं आयोजकों की भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे आप सबसे मिलने और बात करने का अवसर प्रदान किया।

2. संत ईश्वर फाउंडेशन की स्थापना 22 नवम्बर 2013 को श्री कपिल खन्ना जी ने अपने परदादा स्व. सन्त राम खन्ना एवं परदादी स्व. श्रीमती ईश्वर देवी की पुण्य स्मृति में की है, इसलिए इस फाउंडेशन का नाम **संत ईश्वर फाउंडेशन** रखा, जिसका उद्देश्य सामाजिक एकता, सामाजिक समरसता, शिक्षा, महिला कल्याण, बाल कल्याण के साथ ही ग्रामों एवं वनों में निवास करने वाले अशिक्षित साधनहीन गरीब लोगों के विकास हेतु निरंतर कार्य करना है। यह फाउंडेशन राष्ट्रीय सेवा भारती से संबद्ध है तथा यह उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों एवं संस्थाओं में से चार को **'संत ईश्वर विशिष्ट सेवा सम्मान'** तथा अन्य बारह

व्यक्तियों को **'संत ईश्वर सेवा सम्मान'** प्रतिवर्ष प्रदान करता है। **संस्था द्वारा भारतीय विचारधारा पर शोध और विशेष योगदान के लिए विशिष्ट पुरस्कार भी दिए जाते हैं।**

3. आप जानते हैं कि भारतीय संस्कृति कर्ममय है। हम कर्म को प्रधान मानते हैं। समाज सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। जहां सेवा होती है, वहीं प्रेम होता है। जीवन का सारा निचोड़ और सार सब कुछ मानव के परस्पर प्यार, सहयोग और सेवा में समाहित है। हमें समाज से बहुत–कुछ हासिल हुआ है और यह हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज की बेहतरी के लिए कार्य करें और सेवा को स्वभाव बनाएं। जन–जन की सेवा ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। **वास्तव में नर सेवा ही नारायण सेवा है।**

4. आदिवासी समाज भारत की कुल जनसंख्या का साढ़े आठ प्रतिशत हैं। वे भारतीय समाज के एक ऐसे भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो हमारी सभ्यता के सांस्कृतिक ताने–बाने का अभिन्न हिस्सा हैं। अधिकांश आदिवासी इलाके हमारे देश के दूरदराज के क्षेत्रों में स्थित हैं जो बहुत अलग–थलग हैं, इसलिए उन्हें शिक्षा, प्रौद्योगिकी, बेहतर आजीविका, स्वास्थ्य देखभाल और बुनियादी सुविधाओं के लाभ दिए जाने की दिशा में कई कदम उठाए गए हैं। सरकार के प्रयासों से tribals के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के लागू होने के फलस्वरूप tribal population की शिक्षा और अवसरों में काफी प्रगति हुई है। इस दिशा में निरंतर कार्य हुए हैं और विकास की यह प्रक्रिया काफी तीव्र हुई है। हालांकि इस दिशा में अभी और प्रयासों की भी आवश्यकता है। मुझे इस बात की खुशी है कि ऐसे समर्पित लोगों और संगठनों की हमारे यहाँ कमी नहीं है जो इस क्षेत्र में निःस्वार्थ कार्य कर रहे हैं। मैं उन व्यक्तियों और संस्थाओं को बधाई

देती हूं जो आदिवासी क्षेत्र में आदिवासियों के हितार्थ काम कर रहे हैं और इन्हें विकास के पथ पर लाने हेतु उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

5. व्यास ऋषि ने पुराणों में लिखा है और मैं उद्धृत करती हूं:–

**"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं।**

**परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनं।।"**

(अठारहों पुराणों में महर्षि व्यास जी ने दो वचन कहे हैं, परोपकार से बड़ा कोई पुण्य नहीं है और दूसरों को पीड़ा देने से बड़ा पाप कोई नहीं है।)

6. मानव एवं समस्त जीवों के लिए कल्याण का कार्य ही हमारी सभ्यता, परम्परा और संस्कृति है। मेरा मानना है कि लोगों की सेवा समाज को विनम्र भाव से वह सब लौटाने का छोटा–सा प्रयास है जो हमने समाज से पाया है। इतना ही नहीं, इससे हमारे दिल, दिमाग और हमारी आत्मा को भी खुशी मिलती है। दूसरों को खुशी देने से बढ़कर और कोई खुशी नहीं हो सकती। **In this context, I cannot stop myself mentioning what Swami Vivekananda had once said and I quote,** "***The life is short, the vanities of the world are transient, but they alone live who live for others, the rest are more dead than alive."*** इस संसार में मानव जाति की सेवा के अनेक मौके मिलते हैं और हमें उन अवसरों का सदुपयोग करना चाहिए। कोई भी जनकल्याणकारी नीति की सफलता इसमें निहित है कि वह जन–जन के मध्य पहुंचे और सभी मिलजुलकर सहयोग से कार्य करें। public involvement से ही हम नीतियों को सार्थक तरीके से लागू करा सकेंगे।

7. मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि राष्ट्रीय सेवा भारती संस्था राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विधाओं में समाज सेवा का काम कर रही है और पूरे भारत में अनेक समुदाय एवं सेवा आधारित संगठनों को संरक्षण प्रदान करने का कार्य कर रही है।

8. मेरा मानना है कि विकास के पथ पर जो आगे बढ़ गया है, उसका दायित्व है कि वह पीछे मुड़कर देखे ही नहीं, परंतु पीछे वाले को अपना हाथ देकर उसे अपने समकक्ष लाए। **वास्तव में सफल व्यक्ति अकेले सफलता प्राप्त नहीं करते हैं बल्कि वे अपने साथ अनेक लोगों के जीवन में बेहतरी एवं सफलता लाते हैं।**

9. समाज और देश में शैक्षिक और आर्थिक समानता के लक्ष्य की प्राप्ति से राजनैतिक समानता और भी अधिक सार्थक और महत्वपूर्ण हो जाएगी। समाज को और अधिक समतावादी बनाने के लिए सरकार की कोशिशों के साथ–साथ स्वैच्छिक संगठनों, सिविल समाज और व्यक्तियों की मदद की भी जरूरत है। मैं यहाँ इस बात का उल्लेख करना चाहूंगी कि राष्ट्रीय सेवा भारती ने इस बात को सही ढंग से समझते हुए लोगों के हित के लिए काम कर रहे विभिन्न गैर सरकारी संगठनों और समुदाय आधारित संगठनों को एक मंच प्रदान किया है।

10. जहाँ तक महिलाओं और बच्चों से जुड़ी समस्याओं की बात है, इसमें कोई संदेह नहीं कि उनकी विशेष रूप से देखभाल और उनकी रक्षा की जरूरत है। हमारे संविधान के अनुच्छेद 15(3) में देश को महिलाओं और बच्चों के पक्ष में विशेष उपबंध करने की विशेष शक्ति दी गई है। मैं मानती हूँ कि किसी समाज में महिलाओं का दर्जा उस समाज की सभ्यता के विकास का सूचक है। आज हम महिलाओं को शक्तियां देने की बात करते हैं और उन्हें परिवर्तन का माध्यम मानते हैं। महिलाएं जीवन के हरेक क्षेत्र में

बराबर की जिम्मेदारियां निभा रही हैं और वे एक सशक्त और समृद्ध भारत बनाने में योगदान कर रही हैं। आज की महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आर्थिक परिसम्पतियों, संसाधनों और राजनैतिक अवसर, सभी दृष्टि से समृद्ध हैं एवं उन्होंने हर जगह अपनी प्रतिभा को प्रमाणित किया है। फिर भी मेरा यह मानना है कि अभी बहुत–कुछ किया जाना बाकी है।

11. ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के मुद्दे के बारे में मैं कहना चाहूगी कि भारत गाँवों में बसता है और गाँवों का विकास किये बिना समृद्धि का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता। हमारी अधिकाँश जनसंख्या गाँवों में बसी हुई है और वे खेती–बाड़ी और उससे जुड़े कार्यकलापों से अपनी रोजी–रोटी कमाते हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि जहाँ तक भारत के सामाजिक और राजनैतिक संगठन की बात आती है, गांधीजी इसका केंद्र गाँवों और गांववासियों को मानते थे। हाल ही में शुरू किये गए सांसद आदर्श ग्राम योजना का उद्देश्य महात्मा गांधी की आदर्श भारतीय गाँव की इसी व्यापक संकल्पना को वर्तमान युग की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए साकार करना है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में शिक्षा, उद्यमशीलता, बुनियादी सुविधाएँ और सामाजिक ढांचागत विकास की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

12. संत ईश्वर फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस सम्मान समारोह में आदिवासी क्षेत्र में निःस्वार्थ समाजसेवा करने वाले केरल के ''**विवेकानन्द मेडिकल मिशन**'' एवं महाराष्ट्र के **श्री पेंडर महाराज,** महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में महाराष्ट्र की **श्रीमती ज्योति पठानिया**, खारगोन की **सुश्री भारती ठाकुर** एवं छत्तीसगढ़ की **सुश्री हर्षा साहू** तथा ग्रामीण विकास के क्षेत्र में **सर्वश्री दिलीप कुमार नाथ, राम किशन तथा गिरीश प्रभुणे** को सम्मानित किया गया है

जबकि विशिष्ट योगदान के लिए असम के **'हेरिटेज फाउंडेशन'**, उत्तराखण्ड के **जगत सिंह जंगली** तथा चित्रकुट की '**दृष्टि ब्लाइंड स्कूल**' को सेवा सम्मान मिला है जबकि '**जेलियांगरंग विद्यालय नागालैंड', देहरादून के एडवोकेट रेणु सिंह, पिलखुवा की 'अनवरपुर ग्राम विकास समिति' तथा छत्तीसगढ़ के जगदलपुर की संस्था 'साथी–एप्रोप्रियेट टेक्नोलॉजी'** को विशिष्ट सेवा सम्मान मिला है। इन सभी पुरस्कार विजेताओं एवं संगठनों को बहुत–बहुत बधाई देती हूं और उम्मीद करती हूं कि सेवा के कार्य को निरंतर करते हुए वे कर्त्तव्यनिष्ठा की मिसाल प्रस्तुत करते रहेंगे।

13. मैं यह भी आशा करती हूं कि इस प्रकार के आयोजनों से समाज सेवा में लगे कई संगठन एवं व्यक्ति भी प्रेरित होंगे एवं पूरे मनोयोग से कार्य करेंगे। आयोजकों को भी इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए बधाई देती हूं।

धन्यवाद।